मिनेण्डर के सिक्के

डेमेट्रियस के पश्चात् यूथीडेमिस वंश का सबसे प्रतापी राजा मेनेन्डर हुआ। टेरलन महोदय का कथन है कि डेमेट्रियस और मनेन्डर की कुछ वर्गाकार मुद्राओं में इतनी अधिक समता है कि दोनों शासक एक ही काल और प्रदेश के शासक प्रतीत होते हैं। टार्न महोदय के अनुसार मिनेन्डर डेमेट्रियस का कनिष्ठ समकालीन था। ऐसी दशा में मनेन्डर का काल 150 ई० पू० के आस-पास रहा होगा। इस कथन की पुष्टि एगाथोक्लिज़ के सम्बन्ध में होती है। एगाथोक्लिज़ की छः मुद्राओं को हेलिओक्लीज ने 150 ई०पू० के लगभग अपने नाम से पुनः प्रसारित किया था। अतः एगाथोक्लिज़ के प्रति-मिनेन्डर की तिथि भी 150 ई० पू० में रही होगी। वासुदेव उपाध्याय के अनुसार मिलिन्द या मिनेन्डर पंजाब के भू-भाग का राजा था और उसकी राजधानी स्यालकोट थी। जिसके कारण उसके सिक्के उत्तर पश्चिम भारत के क्षेत्रों से अधिकांश मिले हैं।

1. चाँदी के सिक्के → इसकी तौल 146 ग्रेन है मुख्य भाग पर दाहिनी ओर मुकुटमय राजा का सिर, मेटल शिरस्त्राण को धारण किये गए है। ग्रीक लेख "बैसिलिओस सोटिरस मेनन्ड्रव" पृष्ठ भाग पर बायीं ओर खड़ी हुई शिरस्त्राण युक्त एथेन की आकृति है, बायीं ओर फैले हुए बायें हाथ में शील्ड तथा बायें हाथ में वज्र पकड़े हुए है। खरोष्ठी लेख "महरजस त्रतरस मेनद्रस" लिखा है।

2. स्वर्ण सिक्के :→ इसकी तौल 37.7 ग्रेन है। अग्रभाग पर बायीं ओर मुकुटमय राजा का अर्द्धचित्र दाहिने हाथ में पकड़े हुए है। ग्रीक लेख "बैसिलिओस सोटिरस मेनन्ड्रव" पृष्ठभाग पर बाहर की ओर फैली हुई बायीं भुजा में शील्ड को पकड़े हुए बायीं ओर एथेन की मूर्ति है। बायें हाथ में वज्र, बायीं ओर मोनोग्राम बना है। खरोष्ठी लेख "महरजस त्रतरस मेनद्रस है।"

ताम्र सिक्के :→ इसकी तौल 38 ग्रेन है। अग्रभाग पर हस्ति सिर बना है जिसके गर्दन के चारो ओर घंटी लटक रही है। ग्रीन लेख "बेसिलिओस सोटिरस

Scanned with CamScanner

मेनन्ड्रास" और पृष्ठभाग पर हेरेक्लीज की मूर्ति, दो चिन्ह खरोष्ठी लेख "महरजस त्रतरस मेनन्द्रस" उत्कीर्ण है।

इसके चाँदी और ताँबे के सिक्के अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध हुए हैं जिनपर लेख तथा आकृतियाँ उपयुक्त भी ही हैं। इसकी कतिपय कांस्य मुद्राओं पर धर्म चक्र का चित्र मिलता है तथा अन्य मुद्राओं पर "धमिकस" की उपाधि मिलती है। धार्मिक उपाधि का प्रयोग बौद्धों ने किया था। अतः इसे धारण करते हुए मिनेन्डर ने बौद्ध परम्परा के अनुसार अपने बौद्ध धर्म की घोषणा की थी परन्तु टार्न महोदय ने इन चिन्हों को बौद्ध चिन्ह नहीं मानते। उनका कथन है कि मिनेन्डर की मुद्राओं पर जो चक्र है उसका कोई भी धार्मिक महत्व नहीं है। इस प्रकार चिन्ह (चक्र) भारतवर्ष के प्राचीन आहत मुद्राओं पर भी मिलता है। तक्षशिला के उत्खनन से इसी प्रकार की मुद्राएँ मिली हैं। वहाँ पर बौद्ध धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं था। प्लूटार्क का कथन है कि मिलेन्डर अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था। अतः उपाधि का अन्य यूनानी शासकों जैसे एगाथोक्लीज, स्ट्रैटो आदि ने भी धारण किया था।

लेखक ने निम्न साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि वह बौद्ध धर्मानुयायी था और सिक्कों पर उत्कीर्ण धर्म चक्र संभवतः बौद्ध होने का ही सूचक है

स्याम अनुश्रुति में मिनेन्डर को बौद्ध आचार्य नागसेन का शिष्य माना है। मिनेन्डर के गुरु नागसेन ने अपनी अद्भुत शक्ति के प्रताप से महात्मा बुद्ध की एक बहुमूल्य प्रतिमा निर्मित की थी। मिनेन्डर की मृत्यु के पश्चात् उसके अवशेषों के लिए विभिन्न नगरों में झगड़ा हुआ था, अन्त में अवशेष सबके बीच में विभक्त हो गया और प्रत्येक नगर ने उन पर एक स्तूप बनवाया। बौद्ध था उनके अनुयायियों के अवशेषों के ऊपर ही स्तूप बनाने की प्रक्रिया अभी तक प्रचलित रही, अतः वह बौद्ध था।

तारानाथ (तिब्बती लेखक) का कथन है कि वह भौतिक नामक एक बौद्ध भिक्षु ने तुखार के राजा मिनान्डर को बौद्ध धर्म स्वीकार कराया था

अतः उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर निश्चित पूर्वक यह कहा जा सकता है कि मि॰ बौद्ध था और बौद्ध के प्रति प्रगाढ़ भक्ति-भावना से ओत-प्रोत होकर ही उसने भगवान शाक्यमुनि बुद्ध के देहावशेष को प्रतिष्ठापित करवाया तथा धर्म चक्र को अपने सिक्कों पर स्थान दिया जो केवल बौद्ध धर्म का प्रतीकात्मक चिन्ह है और इस चिन्ह का प्रयोग करने वाले राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी होने के अतिरिक्त दूसरे हो नहीं सकते। मिनान्डर के समकालीन इपेन्डर, हर्मेयास, आर्टेमिडोरस, फिलाक्सिनास, एन्टीअलकीडास आदि शासकों ने भी सिक्के मिलते हैं लेकिन उन सिक्कों का कोई खास महत्व नहीं है।